एकलव्य एक आदिवासी बालक था जो गुरु द्रोणाचार्य से तीरंदाजी सीखना चाहता था, परंतु उसे गुरु ने मना कर दिया । फिर उस ने एक मिटटी की मूर्ति स्थापित कर के गुरु द्रोणाचार्य की प्रेरणा में तीरंदाजी सीखना शुरू कर दिया । बाद में एकलव्य अर्जुन से भी बेहतर तीरंदाज बन गया । गुरु ने एकलव्य से गुरु दक्षिणा के रूप में अपने अंगूठे को काट ने को कहा । एकलव्य ने अंगूठे को गुरु दक्षिणा के रूप में काट दिया ।